152.	जयपाल लालु राठोड	शासकीय आदिवासीविकास योजना व आदिवासी जमातींचा शाश्वत विकास (विशेष संदर्भ - हिंगोली जिल्हा)	136
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
154.	[redacted]	[redacted]	144
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
156.	प्रा. डॉ. पी. डी. [illegible]	शाश्वत विकास आणि शेती	151
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
158.	प्रा. अजित जयराम [illegible]	[illegible] पार्श्व [illegible]	160
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
160.	डॉ.[illegible]	भारतीय शेती आणि [illegible] विकास	167
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
162.	डॉ. डी. एम. [illegible]	शाश्वत वि[illegible]	174
[redacted]	Dr.Dipak M.Chavan	[redacted]	[redacted]
164.	प्रा.डॉ.प्रभाकर [illegible]	[illegible]	184
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
166.	प्रा. [illegible]	[illegible]	194
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]
168.	डॉ. सुवर्णा प्रकाश पाटील	महिलांच्या विकासातील लघु-उद्योगांचे महत्त्व	199
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]

170.	डॉ. [illegible] डी. आर.	महाराष्ट्रातील नैसर्गिक संसाधने आणि शाश्वत विकास	208
[redacted]	[redacted]	[redacted]	[redacted]

भारतीय साहित्य मे पर्यावरण

डॉ. संतोष बबनराव माने
शिवराज महाविदयालय गडहिंग्लज (कोल्हापूर)

पर्यावरण और मानव का गहरा संबंध है । पर्यावरण संसार की सभी वस्तु, जीवो' को प्रभावित करता रहा है । भारतीय साहित्य के चिंतन में मानव की तरह पर्यावरण भी मुख्य आकर्षण है । पर्यावरण अपने नियमों में निश्चित है वैसे मानव जीवन में भी नियमों का महत्त्व रहा है । प्रकृति के इस नियमों में बाधा आनेपर पर्यावरण और मानव का नुकसान निश्चित है । फिर भी बुध्दी के बल पर मानव ने प्रकृति के नियमों में बाधा लाने का प्रयास किया है। साहित्य यह मानव जीवन इतिहास का वृत्त है। प्राचीन काल से साहित्य के माध्यम से प्रकृति के नियमों का महत्त्व बताकर मानव को जागृत बनाने का चिरंतन प्रयास हुआ है साहित्य के माध्यम से हमेशा विश्वमंगल की कामना रही है । पर्यावरण संतुलन रखना यह प्रश्न मानव जीव का नहीं बल्कि सभी जीवो के लिए आवश्यक है। फिर भी इन सभी जीवो में बुध्दी का प्रतिक जीव मनुष्य से ही पर्यावरण को हानी पहुँची है। भारतीय साहित्य किसी भाषा विशेष का साहित्य न होकर विविध भाषाओं का साहित्य है। विविध भाषाओं की साहित्यिक धाराएँ भारतीय साहित्य रुपी समुद्र में समाहित है । प्राचीन तत्र साहित्य वेद से लेकर वर्तमान तक का साहित्य भारतीय साहित्य है । भारतीय साहित्य किसी एक भाषा, एक क्षेत्र, एक जाति या एक काल का साहित्य नहीं अपितु भारतीय संस्कृति की भाँती है ।

विश्व के प्रतिबिंब को साहित्य में देखा जा सकता है । प्रेमचंद लिखते है "साहित्य वह जादू की लकड़ी है जो पशुओं में, ईट–पत्थरों में, पेड़–पौधों में विश्व की आत्मा का दर्शन करा देती है।" साहित्य यह विश्व की छाया के बराबर है । प्रकृति में पर्यावरण और जीवो का गहरा संबंध है। पर्यावरण और जीवो के कार्य एकदूसरे पर असर करते रहते है । भारतीय साहित्य जो विभिन्न भाषाओं में होकर भी एक है जिसमें प्रकृति के इन विशेष बातो को देखा जा सकता है । साहित्य का संबंध भाषा से न होकर समाज से होता है इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा है किसी भी भारतीय भाषा में भारत के समाज और जनजीवन से संबंध विषय पर रचित साहित्य भारतीय साहित्य है ।

२ साहित्य यह पूर्व रुप भावना है । वैसे आदिम युग से इस भावना का प्रसार होता गया और धीरे–धीरे भारतीयता की भावना विकसित हुई । यह भावनाएँ सांस्कृतिक, सामाजिक विकास का कारण ही है । भारतीयता शब्द प्राचीन है जो वैदिक और महाभारत काल के समय से रहा है । रामायण और महाभारत के अनुवाद विविध प्राचीन भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है । अखण्ड भारत की कल्पना प्राचीन काल से साहित्य में रही है भारतीय साहित्य का सामाजिक जीवन मूल्यों के साथ संबंध है। एक ओर साहित्य अपने समय के सामाजिक जीवन मूल्यों, मनुष्यके कर्तव्यों, रुढियों को प्रतिबिंबित करता है तो दूसरी ओर समाज की समीक्षा करके उसके रुप को समाज को एक नयी दिशा देने प्रेरक बन जाता है।

भारतीय साहित्य का मुल प्रयोजन जीवन रुपी समाज की बुराईयों को हटाकर सुंदर, आनंदमय जीवन को जागृत करना है । भारतीय साहित्य मे प्रथम साहित्य वेद ग्रंथों में यही भावना रही है । पौराणिक युग तथा पश्चात के बौध्द, जैन धर्मों में मानवतावादी प्रवृत्ति ही रही है। महाभारत में सत्य, क्षमता, पवित्रता, मैत्री आदि आदर्श है तो रामायण में सत्य अहिंसा, तप, त्याग, सेवा को बल देकर सभी प्राणियों, जीवो के प्रति दया को ही सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयास किया है । पर्यावरण में भाषा, भूगोल, जीवन के विकास और परिणाम महत्त्वपूर्ण साबित है । प्राचीन युग के साहित्य में सामाजिक समस्याओं को दिखाकर नीति मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास हुआ है ।

आधुनिक युग में पर्यावरण की बात आनेपर प्राचीन काल से वर्तमान काल तक पर्यावरण में –ह्रास होना देखा है । यह काल संक्रमण काल रहा है । मानवी नैतिक मूल्यों में विश्वास और आस्था कम होती रही है । वर्तमान में वैज्ञानिक प्रगति में मानव अपने भौतिक साधनों को प्राप्त करते–करते अपने नीति मूल्यों से दूर होता गया है । अपनी स्वार्थ रुपी कामना करने दौडने वाला मनुष्य जीवन की सजीवता से दूर होता हुआ एक यंत्र बना है यह उसे शायद पता भी नहीं है । इस स्वार्थी अंधी दौड में यह मानव से अमानव होकर पर्यावरण का सबसे बडा दुश्मन हुआ है । पर्यावरण में फैली प्रदूषणता से भयावह मनुष्य मनुष्यता से खोया खोया है । आज हर एक मनुष्य यह आदर्श मूल्य भोर का तारा बन चुका है । इन सारी कठिन परिस्थितीयों को दूर करना है तो हमें भारतीय साहित्य के मूल्यों को अपनाना प्रथम आवश्यकता है ।

PRINCIPAL
Shivaraj College of Arts,Commerce
& D.S.Kadam Science College,
GADHINGLAJ (Dist.Kolhapur)

Special Issue Theme :-Narural Resources and sustainable Development (Special Issue No.95)
ISSN 2349-638x Impact Factor 7.149 | 29thJuly 2021

प्रदूषण की भयावहता से दूर होना है तो हमे यंत्र रुप से दूर होकर सजीव होना आवश्यक है । इस संसार में प्रकृति ने जीवो के प्रति हमेशा सहयोग ही स्थापित किया है । पुरातन साहित्य में प्रकृति को ३ वंदनीय माना है फिर उसमें अग्नि हो, या वायू, आकाश, धरती, पानी भी है । प्रकृति के यह विविध रुप जीवन प्रदान करने की प्रेरणा रही है परंतु आज का मनुष्य बुध्दीहीन होकर इन रुपो के मूल्यों को त्यागकर शैतान रुपी प्रकृति का निर्माण कर रहा है अपितु उसपर अपने ही सगे--संबंधी को बली देकर अपने आप को मिटा रहा है । आज विश्व के हर जीव के लिए खास मनुष्य के लिए पर्यावरण संरक्षण महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होना आवश्यक है । आज पर्यावरण को बचाने यंत्र नही तंत्र की आवश्यकता है ।

प्रकृति में पर्यावरण के कारण ही जीवो की व्युत्पत्ति है । इन्ही में से मनुष्य जीव ने पर्यावरण को खतरे में लाया है । इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य ने अंधी दौड अपनायी है । निरर्थक भौतिक साधनों से मोहित होकर प्रकृति के महत्त्व से दूर होकर जीवन के दायित्व से दूर होता मानव जीवन है । पर्यावरण के संरक्षण के लिए उसे जागृत होना होगा । पर्यावरण में परि शब्द उपसर्ग है जिसका अर्थ चारों और है । चारों ओर के आवरण से प्रकृति का सुंदर रुप है । इन्ही आवरणों को खत्म करनेवाले मानव को आज सावधान होना आवश्यक है । एकमात्र भारतीय साहित्य के माध्यम से पर्यावरण वादी विचारों को अपनाना सुखमय जीवन का स्त्रोत बन चुका है प्रत्येक जीव का अपना एक पर्यावरण होता है । प्रत्येक जीव पर्यावरण में पैदा होता है, और जीवन यापन करता है । मानव के लिए निर्जीव पाच उपघटकों क्षितिज, जल, पावक गगन तथा समीर व सजीव घटकों में छोटे--बडे जीव जंतु और पेड--पौधे पर्यावरण के अंग है । इन सभी अंगों का प्रभाव मानव जीवन पर होता रहा है ।

अत:वर्तमान काल पर्यावरण को हानी हो रही है और इसका कारण हमारी जीवन शैली है । पर्यावरण के प्रदूषण का परिणाम मानव जीवन शैली पर हावी हो रहा है । आज सारा विश्व इस प्रदूषण की चिंता से ग्रस्त है । परंतु पर्यावरण संरक्षण को लेकर प्राचीन काल से भारतीय साहित्य में महत्त्व है । संरक्षण संबंधी विचार, तत्वों को साहित्य से खोज निकालकर हमारी जीवन शैली में उसे लाना आवश्यक है तभी इस सृष्टि की सुंदरता प्रकट होगी । भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को लेकर सर्वमंगल की भावना प्रकट है,

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्व सन्तु निरामया : ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्व दु:खभाव भवेता ।।"

अर्थात संपूर्ण सृष्टि सुखी और स्वस्थ तभी होगी जब हमारा पर्यावरण स्वच्छ, सुंदर होगा । इसलिए अभी से यह साकार करने के लिए संकल्प लेना आवश्यक है ।

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com